

डॉ. जिम स्पीगल, धर्म का दर्शन, सत्र 14, आस्तिकता और विज्ञान

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स स्पीगल द्वारा धर्म के दर्शन पर दिए गए अपने व्याख्यान का विषय है। यह सत्र 14 है, ईश्वरवाद और विज्ञान।

हमारे समय के विवादास्पद प्रश्नों में से एक विज्ञान और धर्म के बीच के संबंध से संबंधित है।

क्या विज्ञान धर्म के लिए खतरा है? क्या धार्मिक विश्वासों को वैज्ञानिक ज्ञान के साथ जोड़ा जा सकता है? जैसा कि हमने नए नास्तिकों के साथ देखा, यह उनके मुख्य तर्कों में से एक है: कि किसी तरह से आस्तिक विश्वास या किसी भी तरह का धार्मिक रुझान विज्ञान के साथ संघर्ष में है और एक व्यक्ति जो वास्तव में तर्कसंगत है, एक कठोर विचारक है, वह धार्मिक विश्वास, आध्यात्मिक क्षेत्र के बारे में किसी भी तरह की आस्था प्रतिबद्धता से दूर रहेगा, और केवल एक भौतिक ब्रह्मांड और विज्ञान के उद्धार में विश्वास करेगा जो हमें जो भी ज्ञान प्राप्त है उसे प्राप्त करने के लिए है। तो, आइए इस प्रश्न को देखें। क्या विज्ञान धर्म के लिए खतरा है, विशेष रूप से आस्तिकता के लिए? क्या धार्मिक विश्वासों को वैज्ञानिक ज्ञान के साथ जोड़ा जा सकता है? अब, कुछ समस्याग्रस्त दृष्टिकोण हैं जिन्हें हम शुरू से ही देख सकते हैं।

हम पहले ही वैज्ञानिकता या प्रत्यक्षवाद के बारे में बात कर चुके हैं, यह दृष्टिकोण कि सभी ज्ञान विज्ञान के माध्यम से आना चाहिए या सभी ज्ञान, यदि वह ज्ञान है, तो कम से कम वैज्ञानिक रूप से पुष्टि योग्य या सत्यापन योग्य होना चाहिए। यदि कोई दावा वैज्ञानिक रूप से, यानी अनुभवजन्य परीक्षण के माध्यम से सिद्ध नहीं किया जा सकता है, तो उसे बिल्कुल भी सिद्ध नहीं किया जा सकता है। यह वैज्ञानिकता या प्रत्यक्षवाद है।

हम पहले ही देख चुके हैं कि यह दृष्टिकोण अपने आप में समस्यामूलक है क्योंकि यह अपनी मांगों को पूरा नहीं करता। यह स्वयं को खंडित करने वाला है। आप वैज्ञानिकता की थीसिस को वैज्ञानिक रूप से साबित नहीं कर सकते।

यह ऐसी चीज़ नहीं है जिसकी अनुभवजन्य रूप से पुष्टि की जा सके, इसलिए यह अपनी ही ज़रूरतों को पूरा नहीं कर पाती। दूसरा समस्याग्रस्त दृष्टिकोण अंतरालों का ईश्वर मानसिकता है, यह दृष्टिकोण कि धर्म का उद्देश्य वह समझना है जो विज्ञान नहीं समझ सकता। धर्मशास्त्र उन अंतरालों को भरता है जो वैज्ञानिक व्याख्या के बाद रह जाते हैं।

इस दृष्टिकोण की एक बड़ी समस्या यह है कि यह मानता है कि किसी चीज़ का वैज्ञानिक और धार्मिक दोनों तरह से स्पष्टीकरण नहीं हो सकता। तो, आइए विज्ञान और धर्मशास्त्र के कुछ मॉडल देखें। हमें विज्ञान और धर्मशास्त्र के बीच के संबंध को कैसे समझना चाहिए? इस चर्चा के संदर्भ में यहाँ तीन मॉडल दिए गए हैं।

एक है संघर्ष सिद्धांत, जो कहता है कि विज्ञान और धर्म स्वाभाविक रूप से एक दूसरे के विरोधी हैं और किसी को या तो वैज्ञानिक या धार्मिक होना चाहिए। आप दोनों नहीं हो सकते। वहाँ एक तरह का अंतर्निहित संघर्ष है।

इस विचार के बचाव में, लोग अक्सर विज्ञान के इतिहास में कुछ घटनाओं का हवाला देते हैं जहाँ धर्म और विज्ञान या चर्च और विज्ञान के बीच संघर्ष हुआ था, जैसे गैलीलियो विवाद। आधुनिक काल के आरंभ में विवाद इस बात पर था कि क्या पृथ्वी वास्तव में सूर्य के चारों ओर घूमती है और सूर्य और अन्य ग्रह पृथ्वी के चारों ओर घूमते हैं। भू-केन्द्रवादियों बनाम सूर्य-केन्द्रवादियों और चर्च में धर्म के पक्ष में रहने वाले लोगों ने भू-केन्द्रित दृष्टिकोण का समर्थन किया।

इस बीच, गैलीलियो द्वारा समर्थित कोपरनिकन विचार वह दृष्टिकोण था जिसने भूकेन्द्रित दृष्टिकोण को चुनौती दी, और विज्ञान की जीत हुई। गैलीलियो और सूर्यकेन्द्रवादी सही साबित हुए, और यह सिर्फ़ यही दर्शाता है कि हम इन मामलों में चर्च या धर्मशास्त्र पर भरोसा नहीं कर सकते। या डार्विनवाद और 19वीं सदी में विकासवादी सिद्धांत के उद्भव के मामले में, इसे अक्सर एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सबक के रूप में उद्धृत किया जाता है कि यहाँ एक बुनियादी संघर्ष है।

न केवल संघर्ष है, बल्कि कम से कम धार्मिक संशयवादी पक्ष के लोगों के लिए, जब भी ऐसा संघर्ष हो, तो आपको हमेशा विज्ञान का सहारा लेना चाहिए। फिर ऐसे लोग भी हैं जो आस्थावान हैं और जो इस संघर्ष सिद्धांत की पुष्टि करते हैं, लेकिन कहते हैं कि हमें हमेशा विज्ञान के बजाय धर्म या धर्मशास्त्र का सहारा लेना चाहिए। लेकिन क्या इस प्रश्न में कोई अंतर्निहित संघर्ष है, और संघर्ष कहाँ है कि धर्मशास्त्र और विज्ञान कभी-कभी संघर्ष करते हैं?

सिर्फ़ इसलिए कि वैज्ञानिक सिद्धांत कभी-कभी धार्मिक प्रतिबद्धताओं से टकराते हैं, इसका यह मतलब नहीं है कि दुनिया की सच्चाई बाइबल की सच्चाई का खंडन करती है। दोनों ही मामलों में, हम डेटा सेट की व्याख्या करने की कोशिश कर रहे हैं, और हम सभी तरह के सिद्धांत तैयार करते हैं, कभी वैज्ञानिक, कभी धार्मिक। और अगर हमारे सिद्धांत कभी-कभी टकराव में आते हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि दुनिया, दुनिया जिस तरह की है, और शास्त्र वास्तव में क्या सिखा रहे हैं, के बीच कोई टकराव है।

हम इसके बारे में थोड़ी देर में और बात करेंगे। विज्ञान और धर्मशास्त्र के बीच संबंध को देखने का एक और मॉडल वह है जिसे स्वतंत्रता सिद्धांत कहा जा सकता है, जो कहता है कि विज्ञान और धर्मशास्त्र दो अलग-अलग क्षेत्रों से संबंधित हैं। विज्ञान प्राकृतिक व्यवस्था की जांच करता है, और धर्मशास्त्र अलौकिक, आध्यात्मिक क्षेत्र और नैतिक क्षेत्र से संबंधित है, इसलिए वे कभी भी संघर्ष में नहीं आ सकते।

मैजिस्टरिया का विचार, कि विज्ञान की अपनी चिंताएँ हैं और धर्म और धर्मशास्त्र की अन्य चिंताएँ हैं और इसलिए वे वास्तव में कभी संघर्ष नहीं कर सकते। हालाँकि, समस्या यह है कि कुछ मुद्दे हैं जिनकी विज्ञान और धर्मशास्त्र दोनों जाँच करते हैं, और हम इसे शास्त्रों में स्पष्ट रूप से देख

सकते हैं। बाइबल ब्रह्मांडीय उत्पत्ति, मानव स्वभाव, प्रजातियों की उत्पत्ति और दुनिया भर में प्रलयकारी बाढ़ के विचार से संबंधित कुछ मुद्दों पर बात करती है।

इतिहास में ऐसी कई घटनाएँ हैं जिनका उल्लेख और वर्णन धर्मग्रंथों में किया गया है और जो उचित रूप से किसी वैज्ञानिक जांच के अधीन हैं। इसलिए, वहाँ कुछ ओवरलैप है, इसलिए गोल्ड के गैर-ओवरलैपिंग मैजिस्टेरिया के विचार में इसका कोई हिसाब नहीं है। तीसरा मॉडल, जिसका मैं समर्थन करूँगा और मुझे लगता है कि विज्ञान के अधिकांश ईसाई दार्शनिक इसका समर्थन करेंगे, एक इंटरैक्टिव मॉडल है, जो कहता है कि विज्ञान और धर्मशास्त्र एक ही वास्तविकता के लिए इंटरैक्टिव दृष्टिकोण हैं।

कभी-कभी, वे प्रतिस्पर्धी दावे करते हैं, ऐसे में हम क्या करते हैं? खैर, हमें दोनों पक्षों में शामिल सिद्धांतों को और अधिक बारीकी से देखने की ज़रूरत है और देखना होगा कि कोई दूसरे को कहाँ सही कर सकता है। तो, यहाँ मैं विज्ञान और धर्मशास्त्र के लिए एक इंटरैक्टिव दृष्टिकोण के इस विचार को प्रस्तुत करूँगा। संघर्ष के स्तर पर, सिद्धांत के स्तर पर, कुछ संघर्ष है।

वैज्ञानिक सिद्धांत भौतिक दुनिया के किसी आयाम की एक तरह की व्याख्या है, चाहे हम जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान या भौतिकी के बारे में बात कर रहे हों। और धर्मशास्त्र शास्त्र की व्याख्या करता है और उसे व्यवस्थित करने का प्रयास करता है। दोनों ही मामलों में, आपके पास डेटा को व्यवस्थित और व्यवस्थित करने का प्रयास करने के लिए अधिक अमूर्त, सामान्य दावे हैं।

लेकिन यह सब, फिर से, सैद्धांतिक स्तर पर है। जब हम भौतिक दुनिया के वास्तविक तथ्यों या सत्यों और बाइबल के तथ्यों या सत्यों के बारे में बात कर रहे हैं, तो यहाँ विचार यह है कि कोई वास्तविक संघर्ष नहीं है। फिर से, संघर्ष सिद्धांत के स्तर पर उभरता है जब हम एक तरफ़ शास्त्र के तथ्यों या सत्यों या डेटा और दूसरी तरफ़ भौतिक दुनिया की व्याख्या करने की कोशिश कर रहे हैं।

तो यह सवाल उठता है कि हम कैसे जान सकते हैं कि किसी विशेष संघर्ष के मामले में कौन सी सैद्धांतिक व्याख्या दूसरे को सही करेगी? अगर मेरा वैज्ञानिक सिद्धांत और मेरा धर्मशास्त्र एक दूसरे से अलग हैं, तो किसी तरह का संघर्ष है: क्या धर्मशास्त्र को विज्ञान को सही करना चाहिए, या विज्ञान को धर्मशास्त्र को सही करना चाहिए? खैर, हमें मामले-दर-मामला आधार पर आगे बढ़ना होगा, उन सभी तथ्यों पर विचार करना होगा जो हम जानते हैं या जानते प्रतीत होते हैं, और प्रत्येक मामले में हम जो सैद्धांतिक निष्कर्ष निकाल रहे हैं, उसके बारे में सावधान रहना होगा। और दोनों तरफ से सुधार के लिए तैयार रहना होगा। हो सकता है कि मेरे धर्मशास्त्र में कुछ समस्या हो जिसे वैज्ञानिक जांच उजागर कर रही है।

या शायद यह इसके विपरीत है। मेरे वैज्ञानिक सिद्धांत में कुछ समस्या है जिसे मेरा धर्मशास्त्र उजागर कर रहा है। तो, मुद्दा यह है कि कोई भी एक दूसरे को सही कर सकता है।

और यही बात इसे इंटरैक्टिव बनाती है। यह इस बात की मान्यता है कि विज्ञान और धर्मशास्त्र कभी-कभी एक ही मुद्दे से निपटते हैं। वे एक ही मुद्दे पर अलग-अलग पद्धतिगत दृष्टिकोण अपना रहे हैं और एक को दूसरे को सही करने के लिए तैयार हैं।

या शायद हमें एक पूरी तरह से अलग धार्मिक प्रतिमान या वैज्ञानिक प्रतिमान तैयार करने के लिए एक पूरी तरह से नई दिशा में निर्देशित करें। प्रतिमानों की बात करते हुए, आइए थॉमस कुह्न से कुछ सबक पर विचार करें, जो 20वीं सदी के अंत में विज्ञान के एक बहुत ही प्रभावशाली दार्शनिक थे। 60 के दशक की शुरुआत में, उन्होंने अपनी ऐतिहासिक पुस्तक, द स्ट्रक्चर ऑफ़ साइंटिफिक रेवोल्यूशन प्रकाशित की, जिसमें कुह्न ने विज्ञान की प्रकृति के बारे में लोकप्रिय धारणाओं की आलोचना की।

और इनमें से कुछ विज्ञान और धर्म के बीच के रिश्ते के सवाल से संबंधित हैं। तो यहाँ कुह्न से दो महत्वपूर्ण सबक दिए गए हैं, जो उस समय बहुत विवादास्पद थे। पहला यह कि वैज्ञानिक जांच तटस्थ नहीं होती।

जैसा कि उन्होंने कहा, सभी अवलोकन सिद्धांत-आधारित हैं। दुनिया के बारे में हमारी धारणाएँ दुनिया के बारे में हमारे सिद्धांतों से रंगी हुई हैं। हम जो दुनिया देखते हैं या दुनिया में जो घटनाएँ देखते हैं, चाहे वह जैविक हो या रसायन विज्ञान से संबंधित या भौतिकी से संबंधित या कुछ और, हम जो दुनिया देखते हैं उसकी हमेशा एक प्रतिमान द्वारा व्याख्या की जाती है।

प्रतिमान बस एक तरह का सैद्धांतिक मॉडल है जिसे किसी खास क्षेत्र में विकसित किया जाता है। इसलिए, पृथ्वी की प्रकृति के बारे में कोपरनिकन सिद्धांतों के विपरीत टॉलेमिक सिद्धांतों पर विचार करें: भू-केंद्रित और सूर्य-केंद्रित विचार।

क्या पृथ्वी ब्रह्मांड के केंद्र में है, या पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमने वाले कई ग्रहों में से एक है? जब कोई भू-केन्द्रित व्यक्ति बाहर निकलता है और सूर्य को देखता है और आकाश में जाता है, तो उसे अपने दृष्टिकोण का प्रत्यक्ष प्रमाण दिखाई देता है। वे दुनिया को अपने भू-केन्द्रित प्रतिमान के संदर्भ में देखते हैं। जबकि जब कोई सूर्यकेन्द्रित या सूर्यकेन्द्रित व्यक्ति उसी घटना को देखता है, तो वे कहते हैं, ठीक है, हम अप्रत्यक्ष रूप से पृथ्वी को अपनी धुरी पर घूमते हुए देख रहे हैं।

यही कारण है कि ऐसा प्रतीत होता है कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगा रहा है। इसलिए, वे एक ही डेटा को देख रहे हैं, या उन्हें एक समान अनुभव हो रहा है, लेकिन वे घटना को देख रहे हैं, वे अपने स्वयं के व्याख्यात्मक ढाँचे या प्रतिमान के माध्यम से घटना का अनुभव कर रहे हैं। एक और उदाहरण या चित्रण यह है कि मान लीजिए, एक सृजनवादी और एक वृहद विकासवादी एक ही चिड़ियाघर में जाते हैं, और सृजनवादी कहता है, वाह, भगवान द्वारा बनाए गए सभी अलग-अलग जानवरों को देखो।

यह आश्चर्यजनक है। और फिर, मान लीजिए, डार्विनवादी उसी चिड़ियाघर में जाता है और सभी जानवरों को देखता है और उससे निष्कर्ष निकालता है, वाह, क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है? सभी प्रकार के यादृच्छिक उत्परिवर्तनों के साथ युगों के समय में प्राकृतिक चयन क्या पैदा कर सकता है?

इसलिए, सृष्टिवादी और डार्विनवादी एक ही जानवर को देख रहे हैं, लेकिन वे, एक अर्थ में, चीजों को अलग-अलग तरीके से देख रहे हैं क्योंकि वे अलग-अलग सैद्धांतिक ढाँचों या प्रतिमानों के

माध्यम से देख रहे हैं। कुहन बत्तख-खरगोश का उदाहरण देते हैं, जो एक ऐसी छवि है जिसे बत्तख या खरगोश के रूप में देखा जा सकता है, लेकिन एक ही समय में दोनों नहीं। आप उनके बीच टॉगल कर सकते हैं।

और अगर आप किसी को यह बताएँ कि, अरे, मैं तुम्हें एक खरगोश की छवि दिखाने जा रहा हूँ, तो इसे स्क्रीन पर दिखाने से पहले, वे इसे बत्तख के बजाय खरगोश के रूप में देखने की अधिक संभावना रखेंगे। अगर आप उन्हें पहले से बता दें कि, मैं तुम्हें एक बत्तख दिखाने जा रहा हूँ, तो वे इसे खरगोश के बजाय बत्तख के रूप में देखने की अधिक संभावना रखेंगे। इसलिए, बत्तख-खरगोश की छवि के बारे में हम जो पूर्वधारणाएँ लाते हैं, वे कुहन द्वारा यहाँ बताई गई बातों के लिए एक अच्छा सादृश्य हैं।

हम हमेशा दुनिया को कुछ खास सैद्धांतिक लेंस के माध्यम से अनुभव करते हैं। और यह वैज्ञानिकों के लिए सच है, शायद दूसरों के लिए भी ज़्यादा। सैद्धांतिक ग्रिड के माध्यम से व्याख्या करना मानव स्वभाव है।

कुह से एक और बात या सबक यह है कि वैज्ञानिक सिद्धांत डेटा द्वारा निर्धारित नहीं होते हैं। कई अलग-अलग सिद्धांत लगातार एक ही घटना की व्याख्या कर सकते हैं। सिद्धांतों को उनकी व्याख्यात्मक शक्ति, उनके सामान्य फिट, लालित्य, सुंदरता आदि जैसी चीजों के कारण चुना जाता है।

लेकिन वे सख्ती से निष्कर्षित नहीं होते। वैज्ञानिक सिद्धांत केवल डेटा से नहीं निकाले जाते। हमेशा एक तरह की, वास्तव में, एक कल्पनाशील छलांग होती है, जो विज्ञान के इतिहास में, कभी-कभी कुछ बहुत ही हास्यपूर्ण और नाटकीय रूप ले लेती है।

रासायनिक संरचना, रासायनिक बेंजीन के लिए त्रि-आयामी अभिविन्यास के साथ आने वाला व्यक्ति, केकुले नाम का एक व्यक्ति, यह पता लगाने की कोशिश कर रहा था कि यह कैसे काम कर सकता है। वह यह पता लगाने की कोशिश करने के लिए सभी प्रकार के आरेख बना रहा था कि यह कैसे हो सकता है कि आप एक विशेष संख्या में कार्बन और हाइड्रोजन अणुओं के साथ इस रासायनिक बेंजीन को प्राप्त कर सकते हैं। यह कैसे काम करता है? मुझे लगता है कि इसका रासायनिक सूत्र C_6H_6 है।

लेकिन यह काम नहीं कर रहा था। यह सिर्फ़ एक सीधी जंजीर है। फिर, एक दिन वह आग के सामने सो रहा था।

आप एक तरह की स्वप्न अवस्था में चले जाते हैं जब आप पूरी तरह से बेहोश होने से पहले ही बेहोश हो जाते हैं। उसने आग में एक साँप की कल्पना या सपना देखा जो अपनी ही पूँछ को काटता है, जिससे एक छल्ला बन जाता है। उसके दिमाग में बेंजीन था और उसने कहा, शायद यही है।

वह बैठ गया और इसका खाका खींचा। निश्चित रूप से, यही इसका स्पष्टीकरण है। यह ऐसा है जैसे बेंजीन एक वलय है जिसमें बारी-बारी से दोहरे बंधन होते हैं।

यही उनकी समस्या का समाधान था, जो बहुत ही बेतरतीब, बेतरतीब तरीके से हुआ। रेडियोलॉजी का जन्म भी इसी तरह से संयोगवश, बेतरतीब तरीके से हुआ। सभी तरह की वैज्ञानिक खोजें तर्कसंगत तरीकों से नहीं बल्कि कम तार्किक तरीकों से हासिल की गई हैं।

मुझे लगता है कि यह बहुत ज़्यादा हो गया है। ज़्यादातर मामलों में, ये असामान्य रूप से यादृच्छिक होते हैं। लेकिन ऐसे मामले में भी जहाँ कोई वैज्ञानिक तर्कसंगत तरीके से आगे बढ़ता है, सिद्धांत विकसित करने में ज़्यादा व्यवस्थित तरीके से आगे बढ़ता है, यह सिर्फ़ डेटा से सीधे निष्कर्ष नहीं होता है।

वहाँ हमेशा एक कल्पनाशील कदम होता है। जब सिद्धांत विकसित किए जाते हैं, तो वे हमेशा प्रतिस्पर्धी सिद्धांत होते हैं जो समान डेटा की व्याख्या भी करते हैं। लेकिन सवाल यह है कि कौन सा डेटा सबसे अच्छी तरह से समझाता है? आपके पास वास्तव में ये सौंदर्य गुण हैं जिन्हें ध्यान में रखा जाता है, जैसे लालित्य।

कौन सा सिद्धांत डेटा को सबसे सरल तरीके से समझाता है? आप कह सकते हैं कि कुछ सिद्धांत दूसरों की तुलना में ज़्यादा सुंदर होते हैं। आइंस्टीन ने अक्सर इस बात पर ज़ोर दिया। अगर कोई भव्य, एकीकृत सिद्धांत है जो सभी अनुभवजन्य विज्ञानों को बहुत ही कुशल, सुंदर तरीके से जोड़ता है, तो वह अपनी सुंदरता के लिए जाना जाएगा।

इसमें एक तरह की सौंदर्य उत्कृष्टता होगी। वैज्ञानिक सिद्धांत बनाने का भी यही आयाम है। विज्ञान करते समय हम जो धारणाएँ बनाते हैं, उनके बारे में क्या? इस पर भी विचार किया जाना चाहिए।

विज्ञान की पूर्वधारणाएँ। वैज्ञानिकों द्वारा की जाने वाली मान्यताओं में से एक, क्योंकि हर कोई ऐसा करता है, वह है जिसे इंद्रिय बोध की सामान्य विश्वसनीयता कहा जाता है। आप वैज्ञानिक रूप से यह साबित नहीं कर सकते कि आपकी सभी इंद्रियाँ विश्वसनीय हैं, जब तक कि आप शुरू में ही अपनी इंद्रियों की एक निश्चित विश्वसनीयता न मान लें।

आप किसी नेत्र विशेषज्ञ या कान, नाक या गले के डॉक्टर के पास जा सकते हैं। आप अपने कानों की जांच करवा सकते हैं और अपनी सुनने की क्षमता की जांच करवा सकते हैं। लेकिन अपनी इंद्रियों का मूल्यांकन करवाने के लिए ऐसे विशेषज्ञ के पास जाते समय भी, आप पहले से ही अपनी इंद्रियों की सामान्य विश्वसनीयता मान रहे होते हैं।

तो यह एक बुनियादी धारणा है जिसे हमें अवश्य अपनाना चाहिए। यह एक तरह का दार्शनिक विश्वास है कि सबसे कठोर वैज्ञानिक को भी यह मानना चाहिए कि इंद्रियाँ विश्वसनीय हैं। यह एक तरह की आस्था प्रतिबद्धता है।

कार्य-कारण का नियम कहता है कि हर प्रभाव का एक कारण होना चाहिए। फिर से, एक आस्था प्रतिबद्धता। हम इस धारणा से शुरू करते हैं कि प्रभावों के कारण होते हैं।

प्रकृति एक समान है और प्रकृति के नियम स्थिर रहेंगे। भविष्य अतीत जैसा ही होगा।

तर्क के नियम विश्वसनीय और भरोसेमंद हैं; ये सभी ऐसी धारणाएँ हैं जिन्हें हमें विज्ञान और अन्य सभी काम करते समय अपनाना चाहिए। तो यह एक और कारण है कि विज्ञान सब कुछ साबित नहीं कर सकता।

वैज्ञानिकता क्यों झूठी होनी चाहिए। क्योंकि विज्ञान शुरू करने से पहले भी कुछ ऐसी धारणाएँ बनानी पड़ती हैं जो विज्ञान करने से पहले ही बन जाती हैं। इसलिए, यह सब विज्ञान के बारे में हमारे नज़रिए के लिहाज से विनम्र होना चाहिए।

इसका मतलब यह नहीं है कि विज्ञान के अधिकार, शक्ति या महत्व को कम करके आंका जाए, जिसकी असाधारण उपलब्धियाँ हैं, खास तौर पर चिकित्सा, परिवहन और संचार के मामले में। यह एक आश्चर्यजनक बात है कि आप एक वाणिज्यिक विमान में सवार होकर कुछ ही घंटों में न्यूयॉर्क से कैलिफोर्निया पहुँच सकते हैं। हम सर्जरी को बहुत कुशलता से कर सकते हैं, यहाँ तक कि मस्तिष्क की सर्जरी भी कर सकते हैं और सभी तरह की बीमारियों का इलाज कर सकते हैं।

लेकिन इन सबके बावजूद, विज्ञान की अपनी सीमाएँ हैं। और यह एक ऐसी पद्धति है, जो जितनी शक्तिशाली और प्रभावी है, वह कुछ आस्था प्रतिबद्धताओं पर भी निर्भर करती है, जैसे कि विज्ञान की ये पूर्वधारणाएँ, भले ही वे धार्मिक मान्यताओं के बजाय आस्था के दार्शनिक लेख हों।

आइए अब वैज्ञानिक पद्धति से संबंधित कुछ मुद्दों पर चर्चा करें। वैज्ञानिक शोध करते समय, क्या हम धार्मिक विचारों को ध्यान में रख सकते हैं? क्या यह उचित है? और कोई व्यक्ति इस प्रश्न का उत्तर कैसे देता है, यह उत्पत्ति की बहस सहित कई मुद्दों पर उनके दृष्टिकोण को निर्धारित करेगा। इसलिए, यहाँ दो प्रकार के प्रकृतिवाद हैं जिन्हें हमें अलग करना चाहिए।

एक को तत्वमीमांसा प्रकृतिवाद कहा जाता है, जो एक ऐसा दृष्टिकोण है जो केवल भौतिक दुनिया का अस्तित्व मानता है। कि कोई अलौकिक प्राणी नहीं है, कोई ईश्वर नहीं है, कोई देवदूत नहीं है, कोई अमूर्त मानव आत्मा नहीं है। एक अन्य प्रकार का प्रकृतिवाद केवल पद्धतिगत है।

पद्धतिगत प्रकृतिवाद वह दृष्टिकोण है जिसके अनुसार दुनिया के वैज्ञानिक विवरणों में अलौकिक कारकों के संदर्भ के बिना पूरी तरह से प्राकृतिक घटनाओं का उल्लेख होना चाहिए। ऐसे कई समकालीन पद्धतिगत प्रकृतिवादी हैं जो अपने विश्वास और अपनी ईश्वरवादी या यहां तक कि ईसाई प्रतिबद्धता में दृढ़ हैं, लेकिन इस तरह की पद्धतिगत प्रकृतिवाद पर जोर देते हैं कि हमें भौतिक दुनिया में होने वाली घटनाओं के बारे में अपनी व्याख्याओं को भौतिक कारणों के दायरे तक सीमित रखना चाहिए।

और प्रजाति निर्माण या मानव चेतना जैसी घटनाओं की व्याख्या करने के लिए अलौकिक एजेंटों की ओर आकर्षित होना हार मान लेना है; यह मानव आत्मा या किसी विशेष दिव्य रचना की ओर आकर्षित होने की वैज्ञानिक प्रतिबद्धता को त्यागना है। तो यही पद्धतिगत प्रकृतिवादी का दृष्टिकोण है। प्रकृतिवाद के इन दो रूपों को भ्रमित करना आसान है।

कई पद्धतिगत प्रकृतिवादियों पर गुप्त या अनजाने में आध्यात्मिक प्रकृतिवादी होने का आरोप लगाया जाता है। लेकिन फिर से, कोई व्यक्ति एक धर्मनिष्ठ ईसाई हो सकता है और फिर भी ईश्वर, स्वर्गदूतों और मानव आत्माओं में विश्वास करने वाला एक पद्धतिगत प्रकृतिवादी हो सकता है और फिर भी इस बात पर जोर दे सकता है कि हमारी सभी वैज्ञानिक जांच इस सिद्धांत द्वारा निर्देशित होनी चाहिए। इसलिए पद्धतिगत प्रकृतिवाद का तात्पर्य आध्यात्मिक प्रकृतिवाद से नहीं है।

तो फिर, एक ईसाई या कोई भी अन्य आस्तिक सुसंगत रूप से पद्धतिगत प्रकृतिवाद की पुष्टि कर सकता है। लेकिन क्या पद्धतिगत प्रकृतिवाद ईसाई या अन्य आस्तिक के लिए सबसे अच्छा दृष्टिकोण है? यहाँ पद्धतिगत प्रकृतिवाद के लिए तर्क दिए गए हैं। एक विज्ञान की प्रकृति की अपील करता है।

इसमें कहा गया है कि विज्ञान का उद्देश्य प्राकृतिक घटनाओं को अन्य प्राकृतिक घटनाओं के संदर्भ में समझना है। इसलिए, अलौकिक संस्थाओं की ओर आकर्षित होना धोखा है। मैंने एक पूर्व छात्र से बातचीत की, जो एक प्रमुख शोध विश्वविद्यालय में विज्ञान के दर्शन में पीएचडी करने गया था।

और वह एक मजबूत पद्धतिवादी प्रकृतिवादी हैं। तो, हम इस बारे में बात कर रहे थे। जब वह मुझे अपना दृष्टिकोण समझा रहे थे, तो उन्होंने कहा, मैं इसे इस तरह से देखता हूँ: जो व्यक्ति प्रजाति निर्माण या यहाँ तक कि मानव चेतना को समझने के लिए अलौकिक कारणों का सहारा लेता है, वह उस व्यक्ति की तरह है जो फुटबॉल खेल रहा है और सीमा से बाहर चला जाता है, मान लीजिए 15-यार्ड लाइन पर, और फिर वाटर कूलर के पास और उसके साथी साइडलाइन पर होते हैं और फिर मैदान के दूसरे छोर पर वापस सीमा में आ जाते हैं।

10 गज की लाइन अंतिम क्षेत्र में जाती है और कहती है, मैंने स्कोर किया। यह धोखा है। आप सीमा से बाहर जा रहे हैं।

विज्ञान की प्रकृति ऐसी है कि हमें हमेशा प्राकृतिक कारणों की तलाश करनी चाहिए, न कि घटनाओं के अलौकिक कारणों की। जब उन्होंने मुझे यह उदाहरण दिया तो मेरा जवाब था कि, क्या यह सवाल पूछना नहीं है? वे इसे धोखा कह रहे हैं, लेकिन कौन कहता है? किसके अधिकार से हम आश्वस्त हो सकते हैं कि किसी प्रकार के अलौकिक हस्तक्षेप, किसी प्रकार के अलौकिक कारण की घटना का अनुमान लगाना कभी भी ठीक नहीं है? कौन कहता है कि यह निष्कर्ष निकालना अवैज्ञानिक है कि मानव चेतना को मनुष्य में मौजूद किसी आत्मा या आत्मा द्वारा समझाया जाता है? और वह वास्तव में मुझे इस प्रश्न का कोई अच्छा उत्तर नहीं दे सके, सिवाय इसके कि, ठीक है, आजकल विज्ञान इसी तरह से किया जाता है, कम से कम मुख्य रूप से। हालाँकि, आधुनिक समय में, निश्चित रूप से प्रारंभिक आधुनिक काल में, इसे उस तरह से नहीं देखा जाता था।

आधुनिक विज्ञान के जनक लगभग सभी ईश्वरवादी थे, उनमें से कई ईसाई थे, और उन्होंने अपने धर्मशास्त्र को विज्ञान के साथ इस तरह के एकीकरण को पूरी तरह से स्वाभाविक और उचित

माना। इसलिए शायद यह अब प्रमुख दृष्टिकोण है, निश्चित रूप से पश्चिमी सभ्यता में वैज्ञानिक संघ में, पद्धतिगत प्रकृतिवाद के पक्ष में यह बहुत मजबूत धारणा है। लेकिन सिर्फ इसलिए कि हम अब विज्ञान के इतिहास में उस स्थान पर हैं, क्या इसका मतलब यह है कि विज्ञान करने के लिए यह बिल्कुल आदर्श है? पद्धतिगत प्रकृतिवाद के लिए एक और तर्क कार्यात्मक अखंडता की अवधारणा को अपील करता है।

हॉवर्ड वैन टिल और अन्य लोगों ने इस अवधारणा का हवाला देते हुए कहा है कि ईश्वर ने भौतिक दुनिया को आत्मनिर्भर बनाया है और प्रकृति के नियमों के माध्यम से इसे अपने आप संचालित करने में सक्षम बनाया है। इसलिए, हमें अपने सामने आने वाली किसी भी घटना की व्याख्या करने के लिए किसी अलौकिक एजेंट की मदद लेने की आवश्यकता नहीं है। इसके बारे में कुछ बिंदु: यह कार्यात्मक अखंडता की अपील करता है।

यह थोड़ा विडंबनापूर्ण है कि इस पद्धतिगत प्रकृतिवादी दृष्टिकोण को सही ठहराने के लिए, वैन टिल और अन्य लोग कुछ धार्मिक विचारों पर स्पष्ट रूप से निर्भर हैं। यह प्रकृति के नियमों को भी गलत तरीके से समझता है जैसे कि प्रकृति के नियम ऐसी संस्थाएँ हैं जो वास्तव में कुछ भी समझा सकती हैं। प्रकृति के नियम नियमित या नियमित घटनाओं का वर्णन हैं, जिन्हें बदले में अपने स्वयं के स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती है।

व्युत्क्रम वर्ग नियम क्यों है? ऐसा क्यों है कि मजबूत और कमजोर परमाणु बल हैं? ऐसा क्यों है कि ऊष्मागतिकी के ये नियम हैं? इसके लिए स्पष्टीकरण की आवश्यकता है। इसलिए, प्रकृति के नियम कोई कारणात्मक स्पष्टीकरण प्रदान नहीं करते हैं। उन्हें स्वयं ही स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।

तो ये पद्धतिगत प्रकृतिवाद के लिए कुछ तर्क हैं और प्रत्येक के साथ कुछ समस्याएँ हैं। पद्धतिगत प्रकृतिवाद का एक विकल्प आस्तिक विज्ञान कहलाता है। और यह एक वैकल्पिक दृष्टिकोण है जिसकी वकालत एल्विन प्लांटिंगा और अन्य लोगों द्वारा की जाती है जो बुद्धिमान डिजाइन आंदोलन में शामिल हैं।

आस्तिक विज्ञान विज्ञान करते समय धार्मिक विचारों को ध्यान में रखता है। और इस दृष्टिकोण से किसी भी अन्य चीज़ के प्रकाश में वैज्ञानिक अनुसंधान करना ठीक है, जिसमें धार्मिक सत्य भी शामिल हैं। मुझे लगता है कि यह ध्यान देने योग्य है कि अन्य विषय विज्ञान और अन्य विषयों से इनपुट के लिए खुले हैं।

यह एक उचित बात है। अकादमी में, हम अंतःविषय दृष्टिकोणों को महत्व देते हैं और उनकी सराहना करते हैं। विज्ञान इसका अपवाद क्यों होना चाहिए? एक दार्शनिक के रूप में, मैं इतिहास और विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, साहित्यिक आलोचना आदि से इनपुट प्राप्त करना चाहता हूँ।

इतिहासकार विज्ञान, दर्शनशास्त्र आदि से इनपुट प्राप्त करना चाहते हैं। धर्मशास्त्री इन सभी अन्य क्षेत्रों से इनपुट प्राप्त करना चाहते हैं। वैज्ञानिकों को धर्मशास्त्र सहित इन सभी अन्य क्षेत्रों से

इनपुट के लिए क्यों खुला नहीं होना चाहिए? बुद्धिमान डिजाइन सिद्धांत, फिर से, आस्तिक विज्ञान का एक उदाहरण होगा।

बुद्धिमान डिजाइन सिद्धांत निर्जीव प्रकृति में मुद्दों के साथ काम करता है, ब्रह्मांड के साथ-साथ सजीव क्षेत्र और जैविक प्रणालियों के बारे में बात करता है। इस दृष्टिकोण से, डिजाइन के साक्ष्य हमें एक अलौकिक कारण का अनुमान लगाने के लिए उचित रूप से प्रेरित कर सकते हैं, चाहे हम फिर से प्रजातियों की उत्पत्ति या मानव चेतना या ब्रह्मांड की उत्पत्ति के बारे में बात कर रहे हों। जीव विज्ञान और जीवित प्रणालियों के संदर्भ में, अपरिवर्तनीय जटिलता की यह अवधारणा है जो बहुत विवाद का विषय रही है, लेकिन बुद्धिमान डिजाइन सिद्धांतकार अक्सर अलौकिक कारण या स्पष्टीकरण के सबूत के रूप में इंगित करेंगे।

ऐसी संरचना या कार्य के लिए जो ऐसा है कि कोई सरल पूर्ववर्ती प्रणाली नहीं है जो इसे जन्म दे सकती है। जैविक क्षेत्र में, आपके पास ज़रूरत के ये अपरिवर्तनीय जटिल चक्र हैं, उदाहरण के लिए, मैसेंजर आरएनए का उत्पादन करने के लिए डीएनए, जो डीएनए के उत्पादन के लिए आवश्यक है। जैविक कार्य का यह अत्यंत जटिल चक्र या चक्र सबसे पहले कैसे शुरू हुआ? यह अपरिवर्तनीय जटिलता है।

अंत में, मैं विज्ञान और धर्म पर एल्विन प्लांटिंगा के विचारों के बारे में कुछ बातें कहना चाहता हूँ। लगभग 10 साल पहले आई उनकी बेहतरीन किताब जिसका नाम है व्हेयर द कॉम्प्लेक्ट रियली लाइज़। यह शायद विज्ञान और धर्म के विषय पर मेरी अब तक पढ़ी गई सबसे अच्छी किताब है।

इस पुस्तक में उनका सिद्धांत यह है कि विज्ञान और ईश्वरवादी धर्म के बीच सतही संघर्ष है, लेकिन गहरा सामंजस्य है, लेकिन विज्ञान और प्रकृतिवाद के बीच सतही सामंजस्य और गहरा संघर्ष है। तो, विज्ञान और प्रकृतिवाद के बीच संघर्ष का स्रोत क्या है? आम तौर पर, हम दोनों को जोड़ते हैं। हमें लगता है कि, अगर कोई कठोर वैज्ञानिक है, तो उसके कारण, वह प्रकृतिवाद की ओर आकर्षित हो सकता है क्योंकि ये दोनों चीजें एक साथ अच्छी तरह से चलती हैं।

प्लांटिंगा का तर्क है कि, नहीं, वास्तव में, वहाँ एक गहरा संघर्ष है। वे एक साथ अच्छी तरह से नहीं चलते हैं। एक बात के लिए, यह शायद उनका प्रमुख तर्क होगा: प्रकृतिवाद को विज्ञान की इस बुनियादी धारणा को समझने में कठिनाई होती है कि हमारी संज्ञानात्मक क्षमताएँ जांच के लिए विश्वसनीय हैं, कि विचार वास्तविकता को दर्शाता है, और यह कि हमारी संज्ञानात्मक क्षमताएँ झूठी मान्यताओं की तुलना में अधिक सच्ची मान्यताओं का उत्पादन करती हैं।

वास्तव में, वे इस तरह से तैयार किए गए हैं। उनका उद्देश्य सच्ची मान्यताओं का निर्माण करना है। यह एक ऐसी धारणा है जो हम सभी बनाते हैं, सिर्फ वैज्ञानिक ही नहीं।

लेकिन प्लांटिंगा ने कहा है कि यह प्रकृतिवादी के लिए समस्याजनक है क्योंकि यदि आप प्रकृतिवादी हैं, तो आपको डार्विनवादी होना चाहिए। यह शहर में एकमात्र ऐसा खेल है जो सभी जीवित जीवों, जिसमें मनुष्य भी शामिल है, के सभी विभिन्न गुणों और विशेषताओं की व्याख्या करता है। इसलिए, यदि मेरी संज्ञानात्मक क्षमताएँ और मेरे बारे में बाकी सब कुछ प्राकृतिक

चयन का उत्पाद है, जो समय के साथ यादृच्छिक उत्परिवर्तनों पर हावी होता है, तो भले ही इसने पर्यावरण के लिए मेरी प्रजाति में एक तरह की अनुकूलनशीलता पैदा की हो, लेकिन मेरे पास जो संज्ञानात्मक क्षमताएँ हैं, उनका होना मेरे लिए बहुत व्यावहारिक रूप से फायदेमंद है।

यह गारंटी नहीं देता कि मेरा ज्ञान सत्य की ओर लक्षित है। इस पूरी डार्विनवादी कहानी में आपको इस बात का कोई भरोसा कहाँ से मिल सकता है कि हमारी संज्ञानात्मक क्षमताएँ सच्ची मान्यताओं के उत्पादन की ओर उन्मुख हैं? इससे आपको सबसे ज़्यादा यही मिलता है कि हमारा ज्ञान जीवित रहने के लिए कारगर है। हालाँकि, बहुत सी झूठी मान्यताएँ हैं जिनका अस्तित्व के लिए बहुत महत्व हो सकता है।

एक उदाहरण यह है कि मान लीजिए कि मैं किसी भी कारण से यह गलत धारणा बना लेता हूँ कि अगर मैं 50 साल की उम्र तक अपने घर का ऋण नहीं चुकाता हूँ, तो मुझे पकड़ लिया जाएगा और जेल में डाल दिया जाएगा। यह एक हास्यास्पद धारणा है। लेकिन मान लीजिए कि मैं यह धारणा तब बनाता हूँ जब मैं, मान लीजिए, 30 के दशक के अंत में हूँ।

मैं आपको गारंटी देता हूँ कि जब मैं 50 साल का हो जाऊंगा, तब तक मैं अपने घर का कर्ज चुका चुका होऊंगा। अब मुझ पर कोई बंधक ऋण नहीं रहेगा। इससे मुझे फायदा होगा।

इससे किसी को भी लाभ होगा। एक गलत धारणा का अस्तित्व बनाए रखने के लिए बहुत महत्व हो सकता है। यह बहुत ही अनुकूल हो सकता है।

हम अन्य कई उदाहरणों के बारे में सोच सकते हैं। सिर्फ इसलिए कि मेरे पास ऐसी संज्ञानात्मक क्षमताएँ हैं जो व्यावहारिक दृष्टिकोण से बहुत फायदेमंद हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि वे सत्य की ओर लक्षित हैं। लेकिन विज्ञान के लिए यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण धारणा है कि हमारी संज्ञानात्मक क्षमताएँ जो विश्वास उत्पन्न करती हैं, वे सत्य विश्वासों के उत्पादन की ओर लक्षित हैं।

ईश्वरवाद इसका कारण हो सकता है। प्रकृतिवाद हमें इस तरह का आश्वासन नहीं देता, लेकिन ईश्वरवाद देता है क्योंकि एक आस्तिक का मानना है कि ईश्वर ने वास्तव में मनुष्यों को अपनी छवि में डिज़ाइन किया है, और ईश्वर हमें ऐसी संज्ञानात्मक क्षमताएँ देने में रुचि रखेगा जो सत्य-अर्जन करने वाली हों, जिनका उद्देश्य सच्ची मान्यताओं का उत्पादन करना हो।

तो यह विज्ञान और आस्तिकता के बीच सामंजस्य का एक प्रमुख स्रोत होगा, यह विश्वास कि, या यह तथ्य कि आस्तिक धर्म हमारे इस विश्वास के लिए जिम्मेदार है कि मानव संज्ञान सत्य की ओर लक्षित है। साथ ही, प्रकृति की एकरूपता। यह एक ऐसी धारणा है जो वैज्ञानिक हर समय बनाते हैं, लेकिन प्रकृतिवाद किसी भी तरह के विश्वास को समझ नहीं सकता है कि प्रकृति के नियम समय के साथ स्थिर रहेंगे।

लेकिन आस्तिक के पास इसके लिए एक आसान व्याख्या है। ईश्वर ने दुनिया को इस तरह से व्यवस्थित किया है कि प्रकृति के ये नियम समय के साथ स्थिर और विश्वसनीय बने रहेंगे, विज्ञान के लिए विश्वसनीय ताकि हम भविष्य की घटनाओं के बारे में भविष्यवाणी कर सकें, जो विज्ञान के अभ्यास के लिए आवश्यक है। और अंत में, भौतिक दुनिया को समझने में गणित की

प्रभावकारिता, जो प्रकृतिवादी के लिए एक पूर्ण रहस्य है, यह कैसे होता है कि भौतिकविदों द्वारा की गई ये सभी जटिल गणनाएँ दुनिया पर इतनी अच्छी तरह से लागू होती हैं, कि जब आप गणना करते हैं, तो आप आश्चर्य हो सकते हैं कि जब आप प्रयोग करेंगे, तो यह वैसा ही होगा जैसा आपने भविष्यवाणी की थी।

अल्बर्ट आइंस्टीन ने अपने सापेक्षता सिद्धांत के तहत भविष्यवाणी की थी कि दूर के तारों से आने वाला प्रकाश सूर्य के गुरुत्वाकर्षण बल से प्रभावित होगा, क्योंकि यह सूर्य के पास से होकर गुज़रेगा। और जब अगस्त 1919 में दक्षिण अमेरिका में कहीं सूर्यग्रहण के ज़रिए इसका परीक्षण किया गया, तो आइंस्टीन ने वहाँ जाने की ज़हमत भी नहीं उठाई। और जब उनके सिद्धांत की पुष्टि हुई, तो उनके एक सहायक ने उनकी प्रयोगशाला में आकर कहा, डॉ. आइंस्टीन, आपके सिद्धांत की पुष्टि हो गई है, आपके सिद्धांत की पुष्टि हो गई है।

जैसा कि आपने अनुमान लगाया था, बताया गया कि आइंस्टीन ने ऊपर भी नहीं देखा। वह बस अपनी प्रयोगशाला में कुछ नोट्स बनाते रहे। और उनका एकमात्र जवाब था, ओह, मुझे पता था कि ऐसा ही था।

गणित ने इसे साबित कर दिया। इसलिए, उन्हें सिर्फ़ गणित से ही भरोसा हो गया कि भौतिक दुनिया के बारे में यह बहुत ही विवादास्पद दावा सच था। और यह सिर्फ़ एक उदाहरण है।

हर दिन, पूरी दुनिया में, वैज्ञानिक गणितीय गणनाओं के आधार पर भविष्यवाणियाँ कर रहे हैं, और हम इसे बस हल्के में लेते हैं। यहाँ तक कि बुकशेलफ़ बनाते समय या अपने घर में किसी तरह का नवीनीकरण करते समय, जब भी मैं लकड़ी का काम या कुछ और कर रहा होता हूँ, तो मुझे इस तथ्य की याद आती है। मैं गणितीय गणना करता हूँ, और निश्चित रूप से, अगर मैं इसे सावधानी से करता हूँ, तो मैं जो वस्तु बना रहा हूँ, जो बुफ़े बना रहा हूँ, या जो बुकशेलफ़ बना रहा हूँ, वे बिल्कुल वैसी ही बनती हैं जैसी मैंने कल्पना की थी क्योंकि विचार गणितीय क्षेत्र में वास्तविकता को दर्शाता है।

आप इसे कैसे समझाएंगे? खैर, आस्तिक के पास एक स्पष्टीकरण है, और वह यह है कि भगवान ने दुनिया को इस तरह से बनाया है, और उन्होंने मानव मन और मानव ज्ञान को इस तरह से दुनिया में फिट किया है कि हम आश्चर्य हो सकते हैं कि विचार वास्तविकता को दर्शाता है। अब, हमें अपने गणित और बाकी सोच-विचार के तरीके में बहुत सावधान, अध्ययनशील और कठोर होने की आवश्यकता है, लेकिन दुनिया इसी तरह काम करती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि भगवान ने इसे इस तरह से बनाया है।

प्रकृतिवादी के पास यहाँ या इनमें से किसी भी अन्य चीज़ पर कोई स्पष्टीकरण नहीं है। इसलिए, मुझे लगता है कि ये कुछ बहुत अच्छे बिंदु हैं जो प्लांटिंगा विज्ञान और धर्म, विशेष रूप से ईश्वरवाद के बीच गहरे सामंजस्य के बारे में बताते हैं, साथ ही प्रकृतिवाद और विज्ञान के बीच गहरे संघर्ष के बारे में भी बताते हैं। तो, विज्ञान और धर्म के बारे में हमारी चर्चा यहीं समाप्त होती है।

यह डॉ. जेम्स स्पीगल द्वारा धर्म के दर्शन पर दिया गया व्याख्यान है। यह सत्र 14 है, ईश्वरवाद और विज्ञान।